श्रीराम अस्पताल पर अब एमसीएफ ने अपना प्रशासक किया नियुक्त, राजनीति और तेज

सीमा त्रिखा के इशारे पर नगर निगम के अफसरों ने जारी किया पत्र छिपाए रखा, पीर जगन्नाथ ने अपनी स्थिति स्पष्ट की

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबाद: तिकोना पार्क स्थित श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल को नगर निगम फरीदाबाद (एमसीएफ) ने अपने नियंत्रण में ले लिया है और इलाके के एसडीओ को प्रशासक नियुक्त कर दिया है। अस्पताल को संचालित करने वाली संस्था श्रीराम धर्मार्थ चेरिटेबल सोसायटी के कथित प्रधान कंवल खत्री से नगर निगम ने कहा है कि वे अब किसी तरह का दखल नहीं दे सकते। अस्पताल को प्रशासक संचालित करेंगे। लेकिन श्रीराम अस्पताल को जबरन खुलवाने में जो राजनीति की गई है, उसकी तस्वीर अब साफ हो गई है। इस बीच अस्पताल को एमसीएफ के नियंत्रण में दिए जाने का अस्पताल के संस्थापक सदस्य एस.एम. हाशमी ने स्वागत किया है। यह लोग इसे अपनी जीत बता रहे हैं।

मजदूर मोर्चा के पिछले अंक में बताया गया था कि किस तरह इस अस्पताल की सील को जबरन तोड़कर कंवल खत्री ने विधायक और उनके पति की छत्रछाया में इस अस्पताल को खुलवा दिया था। हालांकि पंजाबी बिरादरी ने तय किया था कि रजिस्ट्रार सोसायटीज से जो अंतिम फैसला आएगा, वही ग्रुप अस्पताल चलाएगा। इसके बाद अस्पताल की चाबी लोकल धर्मगुरु पीर जगन्नाथ को सौंप दी गई थी। इसी बीच एमसीएफ ने अपनी जमीन पर इसे अवैध निर्माण मानते हुए अदालत के आदेश पर सील कर दिया था। पीर जगन्नाथ ने गुरुवार को फोन पर मजदूर मोर्चा को बताया कि अस्पताल की चाबी अभी भी उनके पास है। मैंने किसी को भी चाबी नहीं सौंपी है।

विवाद से खेल रही हैं सीमा त्रिखा

पंजाबी बिरादरी के एक साधारण से विवाद को भाजपा विधायक ने अपने निहित स्वार्थ के लिए तूल दे दिया है। सोसायटी के उपप्रधान विशाल भाटिया जिला प्रशासन, एमसीएफ, पुलिस, बीके अस्पताल और हरियाणा सरकार को लिख रहे हैं कि श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल को नियंत्रण में लेकर इसे कोविड सेंटर बनाया जाए, क्योंकि फरीदाबाद इस समय कोविड की महामारी से जूझ रहा है। लेकिन एमसीएफ इस पत्र पर कोई कार्रवाई करता, उससे पहले सीमा त्रिखा के निर्देश पर संस्था का निलंबित प्रधान कंवल खत्री एमसीएफ में सीएमसी के पास एक अर्जी देकर मांग करता है कि श्रीराम अस्पताल को डीसील यानी सील खोल दी जाए ताकि वहां कोविड सेंटर बनाया जा सके। इसके फौरन बाद

30 अप्रैल को सीएमसी आदेश देते हैं कि कोरोना के हालात के मद्देनजर अस्पताल की सील खोल दी जाए। यह आदेश पूरी तरह से राजनीतिक खेल का नतीजा था। क्योंकि एमसीएफ, जिला प्रशासन के पास तो कई दिन पहले से ही विशाल भाटिया का ज्ञापन इसे कोविड सेन्टर बनाने की मांग कर चुका था। लेकिन एमसीएफ के सीएमसी ने बुढ़ापे में अपनी नौकरी बचाने के लिए अस्पताल की सील खोलने का आदेश दे दिया। क्या एमसीएफ के सीएमसी को मीडिया के जरिए यह नहीं पता था कि अस्पताल संचालन और सोसायटी को लेकर दो गुट बन गए हैं। क्या सीएमसी को यह नहीं पता कि अदालत के आदेश पर अस्पताल को अवैध बिल्डिंग मानते हुए सील किया गया था।

बहरहाल, सीएमसी के इस आदेश के बाद एमसीएफ के प्रशासक एसडीओ से कहा गया कि वह अस्पताल को अपने नियंत्रण में लेकर यहां 40 बेड के कोविड सेंटर का संचालन कराए। आदेश की एक प्रति बीके अस्पताल के सीएमओ को भी भेजी गई है ताकि वे इस संबंध में इंतजाम के लिए कदम उठा सकें। एमसीएफ ने कंवल खत्री को यह भी साफ कर दिया है कि अस्पताल डीसील होने का अर्थ यह नहीं है कि एमसीएफ ने किसी भी रूप में सोसायटी या उनके कब्जे को इस अस्पताल पर मान लिया है। अस्पताल की जमीन की लीज बढ़ाने पर अभी कोई विचार नहीं हो रहा है। इतना सबकुछ होने के बाद अस्पताल में कोविड सेंटर शुरू होने के आसार नहीं हैं। कंवल खत्री इसे ओपीडी सिस्टम से ही चलाना चाहता है। अभी तक अस्पताल में कोविड सेंटर बनाने की कोई तैयारी नहीं दिखाई दे रही है।

इस मामले में अब सीमा त्रिखा की भूमिका साफ हो गई है। उनके पति ने भाटिया सेवक समाज के प्रधान सरदार मोहन सिंह भाटिया द्वारा बुलाई गई बैठक में साफ कहा था कि वो अस्पताल खुलवा कर रहेंगे। उन्होंने पंजाबी बिरादरी के दूसरे गुट पर जबरन दबाव बनाने की भी कोशिश की थी। सीमा को लग रहा है कि अस्पताल खुलने पर पंजाबी बिरादरी उन्हें इसका श्रेय देगी और जिसे वो अगले विधानसभा चुनाव में वोट में बदल लेंगी। लेकिन अगले चुनाव में यह बड़ा मुद्दा बनेगा। पंजाबी बिरादरी के लोगों का कहना है कि सभी के अपने-अपने स्वार्थ हैं, इसलिए कोई सीमा त्रिखा से अभी कुछ नहीं कह रहा है लेकिन वो और उनके पति जिस तरह से बिरादरी में गुटबाजी को बढ़ावा दे रहे हैं, उसका नतीजा उन्हें भुगतना पड़ेगा। लोग इस बात पर भड़के हुए हैं कि सीमा के सामने पंजाबी बिरादरी में कोई चुनौती नहीं है। न ही कोई गुट उन्हें नीचा दिखाने के लिए सक्रिय है। अधिकांश भाजपा समर्थक हैं, इसके बावजूद वो और उनके पति अगर ओछी हरकत कर रहे हैं तो इसका संबंध उनकी नीयत से है।

एमसीएफ के पत्र को रोका गया

एमसीएफ में 26 अप्रैल को कंवल खत्री की अर्जी लगने और उस पर 30 अप्रैल को आदेश हो जाने के पत्र को जानबूझकर सीएमसी दफ्तर में रोकने का आदेश सीमा त्रिखा ने दिया था। सीएमसी दफ्तर से कहा गया था जब अस्पताल की सील खुल जाए तो इस पत्र को संबंधित अफसरों को देर से भेजा जाए। यहां तक जिस एसडीओ को प्रशासक लगाया गया, उसे भी जानकारी बाद में दी गई। नियमानुसार सीएमसी के आदेश की कॉपी कंवल खत्री गुट के अलावा विशाल भाटिया और एसएम हाशमी को भी मिलना चाहिए थी लेकिन सीमा त्रिखा की तरफ से सख्त मनाही थी कि कम से कम एक हफ्ते बाद इस पत्र को जाहिर किया जाए। इससे संबंधित एमसीएफ के पत्रावलियों की अगर जांच की जाए तो फाइल का मूवमेंट पूरी तरह सामने आ जाएगा।

आगे का रास्ता क्या है

राजनीतिक ताकतें जिस तरह पंजाबी बिरादरी के इस अस्पताल को लेकर अपना खेल कर रही हैं, उससे इस मामले का अदालत में जाना तय है। अगर सोसायटीज रजिस्ट्रार ने अपना फैसला जल्द नहीं सुनाया कि इसमें दरअसल किस ग्रुप का कब्जा रहेगा तो मामला अदालत तक पहुंचेगा। अदालत में देर लगेगी लेकिन राजनीतिक ताकतों को करारा जवाब अदालत से ही मिलेगा। अस्पताल के संस्थापक सदस्य एसएम हाशमी का कहना है कि वो अस्पताल पर एमसीएफ का नियन्त्रण होने से बहुत खुश हैं।

कम से कम अस्पताल अब जनता के काम तो आएगा। लेकिन मैं फिर स्पष्ट करना चाहता हूं कि मैं इस अस्पताल पर किसी गुट विशेष का कब्जा नहीं होने दूंगा। अगर किसी की नजर अस्पताल की कीमती जमीन पर लगी हैं तो उसके सपने चकनाचूर हो जाएंगे। हाशमी ने कहा कि मैंने खून पसीने से इस जमीन को सींचा है। फिर बृज मोहन भाटिया और शेर सिंह के साथ मिलकर अस्पताल को खड़ा किया है। यहां किसी की दुकानदारी नहीं चलने दूंगा। अगर अदालत जाना पड़ा तो वहां भी जाएंगे।

डुप्लीकेट चाबी से हेराफेरी

पीर जगन्नाथ को नजरन्दाज करते हुए कंवल खत्री गुट राजनीतिक आकाओं के दम पर अस्पताल में घुस तो गया लेकिन अब वहां उसने डुप्लीकेट चाबियों से सोसायटी के एकाउंट्स दस्तावेजों और बैंक के दस्तावेजों से छेड़छाड़ शुरू कर दी है। सोसायटी के बाकी सदस्यों को इसकी जानकारी बैंक में सोसायटी के ट्रांजैक्शन से इसकी जानकारी मिल रही है। पैसा एक खाते से दूसरे खाते में ट्रांसफर किया जा रहा है। अस्पताल के काफी कर्मचारियों को कंवल खत्री ने इन्हीं पैसों से सैलरी भी बांट दी है।

पीर जगन्नाथ ने मजदूर मोर्चा को अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए गुरुवार को फोन पर बताया कि उन्होंने किसी को भी चाबी नहीं दी है। चाबी उनके पास सुरक्षित है। पीर जगन्नाथ के बयान से स्पष्ट है कि कंवल खत्री ने डुप्लीकेट चाबी बनवाकर तमाम तरह की हेराफेरी को अंजाम दिया है।

देखी-सुनी

खबरीलाल

सन फ़्लैग पर है नज़र

आपदा में असर तलाश रहे बड़े कारोबारियों की नज़र सेक्टर 16 ए में बने सन फ़्लैग अस्पताल पर अटक गई है। मज़दूर मोर्चा ने अपने पिछले अंक में सुझाव दिया था कि करोड़ों की देनदारी की वजह से बंद पड़े इस अस्पताल को हरियाणा सरकार टेकओवर करके एक बड़ा कोविड सेंटर यहाँ खोल दे। इस सुझाव के बाद शहर में तमाम कारोबारी सक्रिय हो गए हैं। दो कारोबारियों ने हूडा में इसे ख़रीदने के लिए आवेदन भी कर दिया है। कोविड के लिए फ़रीदाबाद के इंचार्ज बनाए गए अतिरिक्त प्रधान सचिव संजीव कौशल भी इसमें काफ़ी दिलचस्पी ले रहे हैं। दरअसल, इस अस्पताल को एसआरएस ग्रुप ने ख़रीदा था। लेकिन सरकार का करोड़ों रूपया हज़म करने के आरोप में एसआरएस का मालिक जेल में है। वह खुद भी इस जंजाल से मुक्ति चाहता है। इसके बिकने पर उसका भार हल्का हो जाएगा। शहर के बीचोंबीच स्थित सन फ़्लैग की लोकेशन बहुत शानदार है। कारोबारी इसलिए इसे ख़रीदना चाहते हैं कि अगर वे अस्पताल न चला पाए तो यहाँ होटल और शॉपिंग सेंटर बना देंगे।...बहरहाल, सन फ़्लैग का हल इस आपदा में अवसर तलाश रहे लोग ज़रूर निकाल लेंगे।

कौन चलाता है सीएम का सोशल मीडिया

हरियाणा के सीएम मनोहर लाल खट्टर के सोशल मीडिया एकाउंट से अंग्रेज़ी में पोस्ट करने पर कई बार ऐसा कुछ हो जाता है कि जनता में उसका मज़ाक़ बन जाता है। अभी जब 9 मई को सरकार ने महामारी एलर्ट जारी किया और लॉकडाउन को 17 मई तक बढ़ाने की घोषणा की तो खट्टर के ट्विटर हैंडल से अंग्रेज़ी में ट्वीट किया गया कि To contain the spread of Corona in Haryana...**यह पहली लाइन थी जिसका अर्थ है कि हरियाणा में कोरोना फैलाने के लिए....इस लाइन के बाद कहीं जाकर सेफ्टी यानी सुरक्षा की बात कही गई है। ज़ाहिर है कि खट्टर का सोशल मीडिया हरियाणा लोकसंपर्क विभाग का ही कोई शख़्स या अधिकारी सँभालता होगा। लेकिन जैसा चीफ़ सेक्रेटरी के दफ़्तर से आदेश हो गया, हूबहू उसी को कॉपी कर दिया जाता है। अधिकारी यह भूल जाते हैं कि हरियाणा में भी पढ़े लिखे लोग रहते हैं और वे ऐसी चीजों का मज़ाक़ भी बनाते हैं। बेहतर है कि खट्टर हिन्दी में ही ज़्यादातर ट्वीट कराया करें।**

अंतिम संस्कार में भी मीडिया प्रिविलेज

आजतक चैनल के एंकर रोहित सरदाना की मैट्रो अस्पताल में हार्ट अटैक से दुखद मौत हो गई थी। आमतौर पर कोरोना मरीज़ की मौत पर तमाम प्रोटोकॉल का पालन होता है लेकिन रोहित के मामले में ऐसा नहीं हुआ। शव परिवार को सौंप दिया गया। परिवार शव लेकर कैथल चला गया, जहां उनका अंतिम संस्कार हुआ। 6 मई को चौधरी अजित सिंह का गुड़गाँव के अस्पताल में निधन हो गया। वह लंबे समय से बीमार थे। अजित सिंह के बेटे और पूर्व सांसद जयंत चौधरी अपने पिता के पार्थिव शव को बागपत अपने पैतृक गाँव ले जाना चाहते थे। लेकिन उन्हें अफ़सरों ने कोरोना प्रोटोकॉल समझाया। जयंत चौधरी भी मान गए। गुड़गाँव में ही अजित सिंह का अंतिम संस्कार हुआ। जिसमें जयंत सहित पाँच लोग मौजूद थे। दोनों घटनाक्रमों से साफ़ है कि चूँकि रोहित सरदाना मीडिया हस्ती थे और वैसे भी सरकार समर्थक एंकर थे, इसलिए उनके पार्थिव शरीर को कैथल ले जाने दिया गया।

यह मज़ाक़ नहीं है, आप इसी लायक़ हैं

हाल ही में डॉक्टरों के तमाम संगठनों, राजनीतिक दलों, एनजीओ ने माँग की सरकार जीवनरक्षक दवाइयों पर से जीएसटी हटा दें तो ये दवाएँ और भी सस्ती हो जाएँगी। इस पर मीडिया ने जब देश की वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से सवाल किया तो वित्त मंत्री ने जवाब दिया कि जीएसटी हटाने से ये दवाएँ और महँगी हो जाएँगी और आम लोगों की पहुँच से दूर हो जाएँगी। पत्रकारों ने सिर पीटा लिया और कार्टूनिस्टों ने इस पर कार्टून बना डाले। लोगों ने निर्मला सीतारमण का जमकर मज़ाक़ उड़ाया। ...लेकिन ये मज़ाक़ दरअसल उनका बना है, जिन्होंने निर्मला सीतारमण और पूरी सरकार को चुना है। मानसिक दिवालियेपन के शिकार लोग हमेशा मानसिक दिवालिया लोगों को ही चुनते हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06